

डॉ. डेविड एल. मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी, सत्र 16, परमेश्वर की छवि, भाग 2, और परमेश्वर के राज्य का परिचय

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह ईश्वर की छवि, भाग 2, और ईश्वर के राज्य का परिचय पर सत्र 16 है।

इसलिए, हम कुलुस्सियों के अध्याय 3 और श्लोक 9 और 10 को देखकर समाप्त करते हैं, जहाँ हमें हमारे, उनके लोगों में ईश्वर की छवि के नवीनीकरण का संदर्भ मिलता है, और मैं इसे कुलुस्सियों के अध्याय 1 और श्लोक 15 से जोड़ना शुरू करता हूँ जहाँ यीशु मसीह, स्वयं देहधारी मसीह, ईश्वर की छवि है।

और अब 3, 9, और 10 में, विशेष रूप से कुलुस्सियों के पद 10 में, हम परमेश्वर की छवि के बारे में एक संदर्भ पाते हैं जो अपने निर्माता की छवि में ज्ञान में नवीनीकृत हो रही है। संभवतः, यह जुड़ाव यह है कि मसीह से जुड़ने के कारण, जो परमेश्वर की छवि है, अध्याय 1, पद 15, कि छवि हमारे अंदर नवीनीकृत होने लगी है। इसलिए पुराने मनुष्य, पुराने स्व से जुड़ने से नहीं, आदम में होने से, बल्कि अब मसीह में होने से, नए मनुष्य से जुड़ने से जो परमेश्वर की छवि है, अध्याय 1 पद 15, अब पॉल कहता है कि परमेश्वर की छवि हमारे अंदर नवीनीकृत हो रही है।

तो, यह छवि का पहले से ही मौजूद पहलू है। हम पहले से ही छवि में नवीनीकृत हो रहे हैं। आदम ने जो छवि खो दी थी या बर्बाद कर दी थी, वह अब नए मनुष्य यानी यीशु मसीह के व्यक्तित्व से जुड़ने के कारण हममें पुनः स्थापित हो रही है।

कुछ लोगों ने यह भी सुझाव दिया है कि श्लोक 10 में ज्ञान में नए सिरे से होने का संदर्भ है, और कुछ ने सुझाव दिया है कि यह ज्ञान को प्रतिबिंबित कर सकता है, उत्पत्ति अध्याय 2 में अच्छे और बुरे के ज्ञान का वृक्ष। मैं इस पर आगे नहीं बढ़ना चाहता, लेकिन मुद्दा यह है कि कुलुस्सियों अध्याय 3 और अध्याय 1 में भी छवि की भाषा में उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 के स्पष्ट संदर्भ हैं। एक और जगह जहाँ हमें पॉलिन साहित्य में ईश्वर की भाषा की छवि मिलती है, वह है 2 कुरिन्थियों। 2 कुरिन्थियों अध्याय 3 और श्लोक 18 में, उदाहरण के लिए, 2 कुरिन्थियों 3 और श्लोक 18।

मैं वापस जाकर 17 पढ़ूंगा, और अब प्रभु आत्मा है। यह उस खंड का अंत है जो नई वाचा से संबंधित है, पॉल नई वाचा का एक मंत्री है जो पवित्र आत्मा के देने और पवित्र आत्मा की सेवकाई के इर्द-गिर्द केंद्रित है। यह यह कहकर समाप्त होता है, अब प्रभु आत्मा है, और जहाँ प्रभु की आत्मा है, वहाँ स्वतंत्रता है।

और हम सब जिन्होंने अपने चेहरे खोले हैं, प्रभु की महिमा का ध्यान करते हैं, जो प्रभु की ओर से, जो आत्मा है, उसकी महिमा के अनुसार निरंतर बढ़ती जाती है। इसलिए अब स्वरूप में नया बनते हुए, परमेश्वर की छवि मसीह की छवि में बदलती जा रही है, जो अब उसके लोगों के जीवन

में आत्मा के कार्य के द्वारा आती है। अध्याय 4 और पद 4, इस युग का परमेश्वर, अभी भी 2 कुरिन्थियों, अध्याय 4 और पद 4, इस युग के परमेश्वर ने अविश्वासियों के मनो को अंधा कर दिया है ताकि वे सुसमाचार के प्रकाश को न देख सकें जो मसीह की महिमा को प्रदर्शित करता है जो परमेश्वर की छवि है।

कुलुस्सियों 1 और पद 15 में जो हम पाते हैं, उसके समान भाषा। इसलिए, सबसे अधिक संभावना है कि 2 कुरिन्थियों के इन पाठों को रोमियों 8-29 और 1 कुरिन्थियों 15 और 45 और उसके बाद के 49 की तरह ही समझा और पढ़ा जाना चाहिए। इसके अलावा, कुलुस्सियों अध्याय 1 और पद 15 में मसीह को परमेश्वर की छवि बताया गया है।

दिलचस्प बात यह है कि 2 कुरिन्थियों के संदर्भ के चरमोत्कर्ष पर, 2 कुरिन्थियों 5:17 है, जो नई सृष्टि का पाठ है। यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है। इसलिए अब परमेश्वर एक नई सृष्टि पर ऐसा करता है, जिसका उद्घाटन वह अपने पुत्र यीशु मसीह के पुनरुत्थान के माध्यम से करता है।

एक बार फिर, आदम की छवि और आदम को जो करना था, उसकी पूर्ति में यीशु परमेश्वर की सच्ची छवि है। अब, यीशु परमेश्वर की सच्ची छवि है, और मसीह से संबंधित होने के कारण हममें यह छवि बहाल हो जाती है। उनकी पवित्र आत्मा के माध्यम से, उस छवि को हम यीशु मसीह की छवि में बदल रहे हैं, इसलिए हम वह बहाल करना और पूरा करना शुरू कर रहे हैं जिसे आदम उत्पत्ति अध्याय 1 में पूरा करने में विफल रहा। इसलिए चार्ल्स स्कोबी की पुस्तक, द वेज़ ऑफ़ अवर गॉड, उनके बाइबिल धर्मशास्त्र से फिर से उद्धृत करते हुए, उन्होंने यह कहते हुए सारांशित किया कि पॉल का मानना है कि युगांतिक युग, यानी नई सृष्टि, परमेश्वर का राज्य, एक मनुष्य द्वारा आरंभ किया गया है, वह यीशु है, जो सभी मनुष्यों के लिए परमेश्वर के इरादे को मूर्त रूप देता है, एक इरादा जिसे पहले आदम ने विफल कर दिया था लेकिन अब अंतिम में पूरा हुआ है।

और फिर, वह ऐसा एक नई सृष्टि पर करता है जिसका वह उद्घाटन करता है। अब, जब हम पॉलिन साहित्य से बाहर निकलते हैं, तो हम यीशु मसीह को परमेश्वर की छवि में या यीशु मसीह को वास्तव में आदम की भूमिका और आदम के आदेश को पूरा करते हुए, जो आदम करने में विफल रहा, उसे पूरा करते हुए स्पष्ट रूप से या स्पष्ट रूप से अन्य संदर्भ देखते हैं। और फिर एक पाठ जिसे हम संक्षेप में देखेंगे, जो मुझे लगता है, अपने लोगों में परमेश्वर की छवि के अभी तक नहीं आए पहलू को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

यीशु मसीह या ईश्वर की छवि में मानवता के संदर्भ के लिए इब्रानियों की पुस्तक शुरुआती बिंदु होगी, विशेष रूप से आदमिक छवि को दर्शाती है। पुस्तक के आरंभ में अध्याय 1 और पद 3 में फिर से ईश्वर की छवि के रूप में यीशु मसीह का संदर्भ हो सकता है। इब्रानियों 1 के पद 3 में, सूर्य ईश्वर की महिमा की चमक है, जो सभी चीजों को बनाए रखने वाले उनके अस्तित्व का सटीक प्रतिनिधित्व है।

अब हम परमेश्वर के परम अंतिम स्वरूप को पाते हैं, वह जो परमेश्वर की महिमा को प्रतिबिम्बित करता है, वह जो स्वयं परमेश्वर है, और परमेश्वर के अस्तित्व का सटीक प्रतिनिधित्व करता है। लेकिन फिर इब्रानियों की पुस्तक के अध्याय 2, पद 8 और 9 में, अध्याय 2 में, वास्तव में इब्रानियों 2 के पद 6 के आरंभ से, लेखक भजन 8 से उद्धरण देना शुरू करता है। हम पहले ही देख चुके हैं कि भजन 8 एक ऐसा भजन है जो परमेश्वर की मूल रचना और परमेश्वर की छवि में बनाई गई मानवता की गरिमा का जश्न मनाता है, जिसे इस पर शासन करने के लिए बनाया गया था। अब इब्रानियों 2 का लेखक उस भजन को उद्धृत करता है, पद 6 से आरंभ करते हुए, वह कहता है, लेकिन अध्याय 2 में, एक स्थान है जहाँ किसी ने गवाही दी है, मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखता है? आदमी का बेटा कि तू उसकी सुधि लेता है।

तूने उन्हें स्वर्गदूतों से थोड़ा कम बनाया, तूने उन्हें महिमा और सम्मान का ताज पहनाया, तूने सब कुछ उनके पैरों के नीचे कर दिया। फिर वह भजन के निहितार्थों को स्पष्ट करता है। सब कुछ उनके अधीन करके, परमेश्वर ने कुछ भी ऐसा नहीं छोड़ा जो उनके अधीन न हो।

फिर भी, वर्तमान में, हम हर चीज़ को उनके अधीन नहीं देखते हैं। यह पहले से ही ऐसा है, या यह अभी तक नहीं है। हम अभी तक मानवता के पैरों के नीचे हर चीज़ को अधीन नहीं देखते हैं।

लेकिन फिर, श्लोक 9 में, वह कहता है, लेकिन हम यीशु को देखते हैं जो थोड़े समय के लिए स्वर्गदूतों से कमतर बनाया गया था, लेकिन अब महिमा और सम्मान के साथ ताज पहनाया गया क्योंकि उसने मृत्यु को सहा ताकि अनुग्रह से, ईश्वर की कृपा से, वह सभी के लिए मृत्यु का स्वाद चख सके। अब, जब मैं इसे पढ़ता हूँ, तो मुझे आश्चर्य होता है कि लेखक ने भजन 8 को क्यों उद्धृत किया। मेरा मतलब है, अगर आप वापस जाएं और भजन 8 को पढ़ें, तो यह वास्तव में भविष्यवाणी नहीं है। यह पहली नज़र में एक दाऊदी भजन, एक तरह का शाही भजन नहीं लगता है जिसे आप अक्सर नए नियम में मसीह पर लागू होते हुए देखते हैं।

भजन 8 क्यों? मैं फिर से सोचता हूँ; संबंध यह है कि दाऊद के पुत्र के रूप में, यदि आप अध्याय 1, श्लोक 5 में वापस जाते हैं, तो लेखक ने पुत्र के पाठ को फिर से उद्धृत किया है, वह यीशु को पुत्र के रूप में संदर्भित कर रहा है। श्लोक 5 में, वह दाऊद का पुत्र है। तुम मेरे पुत्र हो।

आज मैं तुम्हारा पिता बन गया हूँ। मैं उसका पिता बनूँगा, और वह मेरा बेटा होगा, 2 शमूएल 7. तो यह दाऊद के बेटे के रूप में है। अब अध्याय 2 में, हम मसीह को दाऊद के बेटे के रूप में पाते हैं, जो आदम की भूमिका को पूरा करता है।

दूसरे शब्दों में, मानवता के लिए परमेश्वर का इरादा भजन 8 में स्थापित और प्रतिबिम्बित था, कि वे उन सभी चीज़ों पर शासन करेंगे जो लेखक कहता है, लेकिन अब हम ऐसा नहीं देखते हैं। यह अंततः यीशु मसीह में अपनी पूर्णता पाता है, जो दूसरा आदम है। तो फिर, आदम और हव्वा उत्पत्ति 1 और 2 और भजन 8 में जो करने में विफल रहे, वह अब यीशु मसीह में पूरा होता है।

इसलिए, इस कारण से, लेखक मसीह के संदर्भ में भजन 8 को उद्धृत कर सकता है, इसलिए नहीं कि यह आवश्यक रूप से मसीह के आगमन की भविष्यवाणी कर रहा है, बल्कि इसलिए कि

भजन 8 में आदम के लिए परमेश्वर का इरादा अब अंतिम आदम में अपनी पूर्ति पाता है, जो यीशु मसीह है, जो अब वह पूरा करने के लिए आता है जिसे करने में वह विफल रहा। और फिर, वह भजन अध्याय 2 और भजन 110 और 2 शमूएल 7 से दाऊद के पुत्र के रूप में ऐसा करता है। इब्रानियों से आगे बढ़ने के लिए एक और पाठ, जो परमेश्वर की भाषा, आदमिक भाषा की छवि को भी प्रतिबिंबित कर सकता है, वह याकूब का अध्याय 1 और श्लोक 8 होगा। इसलिए, याकूब 1, मुझे खेद है, 18, याकूब 1:18, फिर से, निहित रूप से, निहित रूप से आदमिक छवि को प्रतिबिंबित कर सकता है।

उसने हमें सत्य के वचन के माध्यम से जन्म देने का चुनाव किया, और हम उसके द्वारा बनाए गए सभी प्राणियों में से प्रथम फल हो सकते हैं। और मैं इससे जो कुछ भी कहना चाहता हूँ, वह यह है कि हम पाते हैं, हम इस पाठ का उल्लेख करते हैं, मुझे लगता है, नई सृष्टि पर चर्चा करने और सृष्टि, नई सृष्टि के विषय का उल्लेख करने के संदर्भ में। लेकिन एक बार फिर, यह तथ्य कि हम उसकी सृष्टि के प्रथम फल हैं, वस्तुतः उसकी सृष्टि के प्रथम फल, फिर से, निहित रूप से व्यक्त कर सकता है, कि अब परमेश्वर की अपनी पहली सृष्टि और उसके स्वरूप के वाहक, आदम के लिए मंशा, अंततः एक नई सृष्टि में उसके लोगों में पूरी होती है।

लेकिन मैं प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के साथ समाप्त करना चाहता हूँ और फिर से 21 और 22, विशेष रूप से 22 को देखना चाहता हूँ। विशेष रूप से एक पाठ में, हमने देखा कि प्रकाशितवाक्य 21 और 22 यूहन्ना का छुटकारे के इतिहास के लक्ष्य का चरम दर्शन है, जिसमें सभी मानवता परमेश्वर और मेरे के साथ नए वाचा के रिश्ते में एक नई सृष्टि पर रहती है जो अब उनके बीच में रहते हैं। मैं जो करना चाहता हूँ वह अध्याय 22 के अंत में जाना है, लेकिन ऐसा करने से पहले, बस उस सारांश में ध्यान दें कि मैंने अभी सृष्टि की भाषा बताई है, फिर से पहली सृष्टि से कनेक्शन का सुझाव देते हुए। लेकिन अध्याय 22:5 में, हम पाते हैं कि नई सृष्टि के अपने वर्णन के बिल्कुल अंत में, और अब यूहन्ना स्वयं परमेश्वर के लोगों का वर्णन कर रहा है और वे नई सृष्टि में क्या करते हैं, उनकी भूमिका किस प्रकार की है, और श्लोक 5 कहता है, फिर कभी रात नहीं होगी।

उन्हें, उनके लोगों को, मेमने की रोशनी या सूरज की रोशनी की ज़रूरत नहीं होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें रोशनी देगा, और वे हमेशा-हमेशा के लिए राज करेंगे। अब, मैं राज्य के संबंध में इस पाठ को फिर से उठाऊंगा, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि यहाँ हम उत्पत्ति 1 में आदम और हव्वा के लिए परमेश्वर के इरादे के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करते हैं, कि वे पृथ्वी पर शासन करेंगे। उनके स्वरूप के वाहक के रूप में, परमेश्वर की छवि में बनाए गए लोगों के रूप में, वे सृष्टि पर शासन करेंगे ताकि प्रकाशितवाक्य का अध्याय 22 परमेश्वर के लोगों के साथ हमेशा-हमेशा के लिए एक नई सृष्टि पर राज करने के साथ समाप्त हो, मेरी राय में, मानवता के लिए परमेश्वर के मूल इरादे की पूर्ति में।

इसलिए आदम और हव्वा को, परमेश्वर की छवि के वाहक के रूप में, सारी सृष्टि पर परमेश्वर के शासन को फैलाना था, जो वे करने में असफल रहे, लेकिन अब, यीशु मसीह के माध्यम से, अपने लोगों में परमेश्वर की छवि को पुनर्स्थापित करना शुरू कर दिया और अपने लोगों के साथ उनके मिलन के माध्यम से, उनमें परमेश्वर की छवि को पुनर्स्थापित किया जा रहा है, अब हम पाते हैं कि

अभी तक अंतिम रूप से नहीं पहुँचा गया है। अब, हम परमेश्वर के लोगों के साथ उस पुनर्स्थापना की पूर्णता पाते हैं। हालाँकि यहाँ छवि शब्द का उपयोग नहीं किया गया है, हम कह सकते हैं कि यहाँ परमेश्वर के लोग हैं जो पूरी सृष्टि पर, एक नई, पुनर्स्थापित, नवीनीकृत सृष्टि पर उसके साथ शासन करके परमेश्वर की छवि को दर्शाते हैं। इसलिए, अगर मैं पुराने और नए नियम में परमेश्वर की छवि के विषय को संक्षेप में बता सकता हूँ, तो ग्रेग बील अपने नए नियम के बाइबिल धर्मशास्त्र में यह कहते हैं कि मसीह आदम के लिए अंत समय के रूप में आया है ताकि वह वह करे जो पहले आदम को करना चाहिए था और अपने पिता की छवि को पूरी तरह से प्रतिबिंबित करे और लोगों को भी उस छवि को अपने अंदर पुनर्स्थापित करने में सक्षम बनाए।

ऐसा करने में, मसीह इतिहास को पुनः आरंभ कर रहा है, जो कि एक नया सृजनात्मक युग है जिसे उसके अंतिम आगमन पर सफलतापूर्वक पूर्ण किया जाना है। फिर, मसीह से संबंधित होने के कारण परमेश्वर की छवि हममें बदल जाती है। आदम के अंत में, जो परमेश्वर की छवि को पूरी तरह से दर्शाता है, वह छवि हममें बदल जाती है जो मसीह से संबंधित हैं, जो परमेश्वर की सच्ची छवि है। इसलिए मसीह में, जो काम आदम करने में विफल रहा, वह मसीह में पूरा हो गया और अब उसके लोगों में पूरा हो रहा है और परमेश्वर के लोगों द्वारा परमेश्वर की छवि को प्रतिबिंबित करते हुए एक नई सृष्टि पर शासन करने के साथ पूर्णता में पूरा होगा जैसा कि आदम को मूल रूप से उत्पत्ति अध्याय 1 में माना गया था। तो, बाइबल की शुरुआत और अंत के बीच एक और संबंध।

परमेश्वर की छवि का विषय अगले विषय या अगले विषय, एक बाइबिल धर्मशास्त्रीय नए नियम के विषय में एक अच्छा संक्रमण प्रदान करता है जिस पर हम चर्चा करना चाहते हैं, और वह है परमेश्वर के राज्य का विषय। फिर से, कई विद्वानों का मानना है कि यह व्यापक विषय है या प्रमुख विषय का केंद्र है या नए नियम के धर्मशास्त्र का केंद्रीय विषय है। चाहे ऐसा हो या न हो, यह निश्चित रूप से एक प्रमुख विषय है, और जैसा कि हम देखने जा रहे हैं, यह नए नियम में कई अन्य विषयों को एकीकृत करने में सक्षम है।

और इसलिए जब हम एक बार फिर परमेश्वर के राज्य पर चर्चा करते हैं, तो हमें सृष्टि, परमेश्वर की छवि, परमेश्वर के लोग और नई वाचा पर बात करनी होगी; इन सभी का परमेश्वर के राज्य के विषय से घनिष्ठ संबंध होगा। लेकिन सबसे पहले, भाषाई साक्ष्य का संक्षेप में उल्लेख करने के लिए, परमेश्वर के राज्य विषय से राज्य शब्द हिब्रू माल्कुथ या यूनानी बेसिलिया से आया है जिसका अर्थ है राज्य। लेकिन यह महसूस करना भी महत्वपूर्ण है कि जब हम परमेश्वर के राज्य विषय को देखते हैं तो हमें खुद को उन शब्दों के होने तक सीमित नहीं रखना चाहिए।

हां, वे महत्वपूर्ण हैं, और उन्हें उन शब्दों के अर्थ को समझने के लिए एक प्रारंभिक बिंदु होना चाहिए, लेकिन उनकी उपस्थिति या अनुपस्थिति जरूरी नहीं कि परमेश्वर के राज्य के विषय की उपस्थिति या अनुपस्थिति को दर्शाती हो। इसलिए, यदि राज्य शब्द नहीं है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर के राज्य की अवधारणा, बाइबिल-धर्मशास्त्रीय विषय पर चर्चा नहीं की जा रही है। दोनों शब्द, शायद मुख्य रूप से जब हम परमेश्वर के राज्य के धर्मशास्त्रीय विषय के संदर्भ में सोचते हैं, तो परमेश्वर के गतिशील शासन या शासन या संप्रभुता की धारणा का सुझाव देते हैं।

इतना नहीं, हालाँकि इनका इस्तेमाल किया जा सकता है, जब हम परमेश्वर के राज्य शब्द के बारे में सोचते हैं, तो हमें मुख्य रूप से यूनाइटेड किंगडम जैसे भौगोलिक क्षेत्र के संदर्भ में नहीं सोचना चाहिए। हमें केवल समय की अवधि या किसी अन्य धारणा के बारे में नहीं सोचना चाहिए, बल्कि इसके बजाय, फिर से, हमें परमेश्वर के राज्य के संदर्भ में सोचना चाहिए जो परमेश्वर का गतिशील शासन या शासन या परमेश्वर की संप्रभुता है जिसे वह पूरी धरती पर स्थापित करने जा रहा है। अब फिर से, परमेश्वर के राज्य को समझने के लिए शायद कुछ मॉडलों पर विचार करें।

अतीत में, लोगों ने परमेश्वर के राज्य के साथ कई काम किए हैं। कभी-कभी यह समाज और इस दुनिया के साथ सह-व्यापक हो गया है। क्लासिक डिस्पेंसेशनलिज़्म ने मूल रूप से परमेश्वर के राज्य को भविष्य के सहस्राब्दी राज्य तक सीमित कर दिया जब परमेश्वर पृथ्वी पर मसीह के माध्यम से शासन करेगा, इसलिए उन्होंने इसे एक समय अवधि तक सीमित कर दिया, यानी, हजार साल का शासन जिसके बारे में हम प्रकाशितवाक्य अध्याय 20 में पढ़ते हैं।

हम बाद में परमेश्वर के राज्य के संबंध में उस पाठ के बारे में बात करेंगे, लेकिन इस बिंदु पर, मैं परमेश्वर के राज्य की एक बहुत ही सामान्य अवधारणा का उल्लेख करना चाहता हूँ जो इसे एक विशिष्ट समय अवधि और स्थान तक सीमित करना है, जो कि यीशु मसीह का भविष्य में इस्राएल राष्ट्र पर एक हजार साल तक शासन करना है। हम उस दृष्टिकोण के साथ बातचीत करेंगे, और उम्मीद है कि जैसे-जैसे हमारी चर्चा आगे बढ़ेगी, आप समझ जाएँगे कि परमेश्वर के राज्य का क्या अर्थ है। फिर से, मैं परमेश्वर के राज्य में शामिल हर चीज़ पर चर्चा नहीं करना चाहता।

यह आसानी से एक बहुत व्यापक विषय बन सकता है, लेकिन एक बार फिर, मैं यह देखने के लिए अधिक उत्सुक हूँ कि यह अवधारणा पूरे नियमों में कैसे विकसित होती है और नए नियम में मसीह और उसके लोगों में इसकी पूर्ति कैसे होती है। साथ ही, जैसा कि आप पहले ही अनुमान लगा चुके हैं, हम देखेंगे कि यह अपनी पूर्ति के संदर्भ में पहले से ही लेकिन अभी तक नहीं हुई योजना में कैसे भाग लेता है। हालाँकि, यह सच है कि कुछ समकालिक ग्रंथों में, एक क्षेत्र की धारणा जिसमें कोई प्रवेश करता है, मौजूद प्रतीत होती है क्योंकि, उदाहरण के लिए, ल्यूक अध्याय 16 और श्लोक 16 में, हम बाद में और अधिक विस्तार से देखेंगे कि सुसमाचार परमेश्वर के राज्य के बारे में क्या कहते हैं लेकिन मैं बस कुछ ग्रंथों पर प्रकाश डालना चाहता हूँ।

लूका 16 और पद 16 में लेखक कहता है, "व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की घोषणा यूहन्ना तक की गई। उस समय से, परमेश्वर के राज्य की खुशखबरी का प्रचार किया जा रहा है, और हर कोई इसमें अपना रास्ता बना रहा है। इसका अनुवाद करने के अलग-अलग तरीके हैं, लेकिन मैं इस बिंदु पर केवल इतना जोर देना चाहता हूँ कि परमेश्वर का राज्य एक ऐसा क्षेत्र स्थापित करता हुआ प्रतीत होता है जिसमें कोई भी प्रवेश कर सकता है।

लेकिन मुख्य रूप से, हम देखेंगे कि इस शब्द का इस्तेमाल परमेश्वर के गतिशील शासन या शासन, उसकी संप्रभुता के लिए किया जाता है, लेकिन फिर से, कुछ अवसरों पर, यह उस शासन और संप्रभुता द्वारा बनाया गया क्षेत्र हो सकता है जिसमें लोग वास्तव में प्रवेश कर सकते हैं और उससे संबंधित हो सकते हैं। अब, एक और बात जो हम पाएंगे जब आप पुराने नियम और

नए नियम में परमेश्वर के राज्य के विषय को देखना शुरू करेंगे, वह इस तथ्य के बीच तनाव है कि परमेश्वर पहले से ही राजा है। हम एक पल में देखेंगे कि ऐसे कई भजन हैं जो इस तथ्य को स्थापित करते हैं कि परमेश्वर राजा है जो पहले से ही सारी सृष्टि पर शासन करता है, फिर भी परमेश्वर पहले से ही राजा है, फिर भी उसे अभी भी राजा बनना है। परमेश्वर पहले से ही राजा है, लेकिन वह अभी तक राजा नहीं बना है।

तो, आपको यह भी समझ में आता है कि यद्यपि परमेश्वर राजा है, फिर भी राजत्व और संप्रभुता को अभी भी उसकी सृष्टि में पूरी तरह से साकार किया जाना बाकी है। इसलिए, जैसा कि हम परमेश्वर के राज्य के विषय को देखना शुरू करते हैं, अन्य अधिकांश विषयों की तरह, जिन पर हमने विचार किया है, प्रारंभिक बिंदु उत्पत्ति 1 और 2 में अदन का बगीचा है। इसलिए मैं वापस जाकर विशिष्ट पाठ नहीं पढ़ूंगा, लेकिन मैं जो कुछ भी कहने जा रहा हूं, उसमें से अधिकांश उस सामग्री को प्रतिबिंबित करेंगे जिस पर हमने परमेश्वर की छवि के संबंध में चर्चा की थी। इसलिए, प्रारंभिक बिंदु यह समझना है कि आदम और हव्वा को तब परमेश्वर के उप-शासक के रूप में कार्य करना है।

हमने देखा है कि परमेश्वर की छवि में बनाए जाने के कारण, आदम और हव्वा को उसके प्रतिनिधियों के रूप में शासन करना है, और उन्हें पृथ्वी पर प्रभुत्व का प्रयोग करके पूरी सृष्टि में परमेश्वर की महिमा और परमेश्वर के शासन को प्रतिबिंबित करना है। फिर, उत्पत्ति 3 में, हम बार-बार देखते हैं कि कैसे पाप के कारण उस इरादे और उस योजना को विफल कर दिया जाता है। इसलिए, आदम और हव्वा को परमेश्वर के पवित्र उद्यान से निर्वासित कर दिया जाता है, और मूल रूप से, पृथ्वी शैतान के शासन के अधीन हो जाएगी।

बाद में हम शैतान को देखेंगे, खास तौर पर कुछ नए नियम के पाठों में, कि शैतान इस दुनिया का शासक कैसे है। वह इस दुनिया का राजा है। इसलिए परमेश्वर के राज्य की स्थापना का एक हिस्सा यह है कि कैसे परमेश्वर शैतान को हराएगा और कैसे पृथ्वी एक बार फिर से परमेश्वर और उसके लोगों की संप्रभुता और शासन के अधीन आएगी, जो उत्पत्ति 1 और 2 में परमेश्वर के इरादे की पूर्ति में है। हमने यह भी देखा कि भजन अध्याय 8 में, भजन अध्याय 8 परमेश्वर के मूल रचनात्मक कार्य का जश्न मनाता है और जो मानवता को पूरा करना चाहिए था और जो आदम को सृष्टि पर शासन करके पूरा करना चाहिए था, उसे लगभग आदर्श बनाता है।

आप उसके हाथ के कामों पर शासन करते हैं। आपको उसके हाथ के कामों पर शासन करने के लिए नियुक्त किया गया था। लेकिन स्पष्ट रूप से, जैसा कि हमने इब्रानियों में देखा, ऐसा नहीं हुआ और अभी तक नहीं हुआ है।

लेकिन जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, यीशु मसीह आदम के सृष्टि पर शासन करने के परमेश्वर के सच्चे इरादे की शुरुआत करने और उसे बहाल करने के लिए आते हैं। तो एक बार फिर, हम इसे उत्पत्ति 3 में मानवता के पाप के बाद एक प्रश्न के रूप में रख सकते हैं। और इसी तरह हम डेसमंड अलेक्जेंडर से ईडन से नए यरूशलेम तक बाइबिल धर्मशास्त्र के अपने छोटे से परिचय में उद्धृत करेंगे। वह कहते हैं कि परमेश्वर की संप्रभुता, मेरे लिए, परमेश्वर के राज्य का एक पर्याय है।

परमेश्वर की संप्रभुता कैसे बहाल की जाएगी और पूरी पृथ्वी पर कैसे फैलाई जाएगी? परमेश्वर का राज्य पूरी दुनिया में कैसे स्थापित होगा? इसलिए, उत्पत्ति 3 के बाद, पुराने नियम के बाकी हिस्से और नए नियम को परमेश्वर की अपनी संप्रभुता को बहाल करने और अपने लोगों के माध्यम से सारी सृष्टि पर शासन करने के इरादे के रूप में देखा जा सकता है।

जैसा कि उन्होंने उत्पत्ति 1 और 2 में इरादा किया था। अगली बार, हम पुराने नियम के मुख्य भागों से गुज़रेंगे। मेरे पास ब्रश से काफ़ी व्यापक स्ट्रोक के साथ चित्रित करने का समय है। लेकिन अगला पड़ाव निर्गमन अध्याय 19, श्लोक 6 हो सकता है। हम पहले ही परमेश्वर की छवि के संबंध में इस पर विचार कर चुके हैं।

हालाँकि, अध्याय 19, श्लोक 6 में, परमेश्वर ने अपना इरादा व्यक्त किया है कि इस्राएल को याजकों के राज्य के रूप में कार्य करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, एक बार फिर, इस्राएल को वह पूरा करना है जो आदम करने में असफल रहा। और वह है परमेश्वर के शासन को पूरी सृष्टि पर फैलाना।

परमेश्वर के शासन के मध्यस्थ होने और पूरी सृष्टि में याजकों के एक राज्य के रूप में उनकी उपस्थिति। तो अब, जो काम आदम करने में असफल रहा, परमेश्वर अब अब्राहम के माध्यम से उसे चुनता है। अब, वह इस्राएल को अपने याजकों के राज्य के रूप में चुनता है ताकि अंततः पूरी सृष्टि में उसका शासन फैल सके।

पूरी सृष्टि में उसके शासन और उपस्थिति की मध्यस्थता करना। इस संबंध में एक और पड़ाव वास्तव में उस पाठ से थोड़ा पहले जाना है। यह निर्गमन पर संक्षिप्त रूप से नज़र डालना होगा।

निर्गमन की पुस्तक में परमेश्वर द्वारा अपने लोगों का उद्धार अंततः निर्गमन अध्याय 15 के अनुसार है। लाल सागर से बाहर निकलने के बाद मूसा द्वारा गाया गया गीत। मिस्रियों के हाथों उत्पीड़न और गुलामी से विजयी और मुक्त।

मूसा का गीत अध्याय 15, श्लोक 11-13 और 17-18 में है। 11-13 में यह कहा गया है। देवताओं में कौन तुम्हारे समान है, पवित्रता में राजसी, महिमा में विस्मयकारी, अद्भुत काम करने वाला।

तूने अपना दाहिना हाथ बढ़ाया, और पृथ्वी ने तेरे शत्रुओं को निगल लिया। तू अपनी अटल करुणा से उन लोगों की अगुवाई करेगा जिन्हें तूने छुड़ाया है। तू अपनी शक्ति से उन्हें अपने पवित्र निवास की ओर ले जाएगा।

और फिर श्लोक 17-18। तू उन्हें लाकर अपनी विरासत के पहाड़ पर लगाएगा। जिस स्थान को तूने अपना निवासस्थान बनाया है, हे यहोवा, तेरे हाथों ने उसे स्थापित किया है।

प्रभु हमेशा-हमेशा के लिए राज करते हैं। इसलिए, निर्गमन एक प्रदर्शन था। परमेश्वर की संप्रभुता की स्थापना और सभी चीज़ों पर उसके शासन को प्रदर्शित करने की शुरुआत।

वास्तव में, कोई यह कह सकता है कि निर्गमन स्वयं इस तथ्य पर आधारित था कि परमेश्वर सभी चीजों पर संप्रभु राजा था। इसलिए, निर्गमन में भी, हम राजत्व और शासन तथा परमेश्वर की संप्रभुता के विषय पाते हैं। अगला पड़ाव बिंदु इस्राएल के राजतंत्र और दाऊद की वाचा को संक्षेप में देखना होगा।

मैं वापस जाकर 2 शमूएल का पाठ संक्षेप में पढ़ूंगा, और फिर हम कई अन्य पाठ नहीं पढ़ेंगे। दाऊद की वाचा के संबंध में हम पहले ही कई पाठ पढ़ चुके हैं। इसलिए, दाऊद की वाचा के बारे में हमने जो कुछ भी कहा वह अब मैं जो कह रहा हूँ उस पर लागू होता है।

और इसीलिए परमेश्वर ने दाऊद के साथ वाचा बाँधी। परमेश्वर ने दाऊद के साथ अपनी वाचा स्थापित की, जहाँ दाऊद अब्राहमिक वादों की पूर्ति में शासन करेगा। दाऊद अब शासन करेगा, और विशेष रूप से, परमेश्वर ने वादा किया कि दाऊद के राजत्व, दाऊद के बाद उसके पुत्र की संतान होगी ताकि दाऊद के सिंहासन का कभी अंत न हो।

तो, अध्याय 7 और श्लोक 14 में, वास्तव में, मैं श्लोक 12 का समर्थन करूँगा। जब तुम्हारे दिन पूरे हो जाएँगे, और तुम आराम करोगे, जब दाऊद मर जाएगा और तुम्हारे पूर्वजों के साथ चला जाएगा, तो मैं तुम्हारे वंशजों को, तुम्हारे अपने मांस और खून को, तुम्हारे उत्तराधिकारी के रूप में खड़ा करूँगा, और मैं उसका राज्य स्थापित करूँगा। तो फिर, दाऊद का राज्य कभी खत्म नहीं होगा; यह चलता रहेगा, और यह शाश्वत होगा।

और वही मेरे लिए एक घर, मेरा नाम, एक मंदिर बनाएगा, और मैं उसके राज्य के सिंहासन को हमेशा के लिए स्थापित करूँगा। मैं उसका पिता बनूँगा, और वह मेरा बेटा होगा। दाऊद की वाचा का सूत्र।

और फिर जब हम शमूएल के बाकी हिस्सों को पढ़ते हैं, जब आप 1 और 2 राजाओं में जाते हैं और इतिहास पढ़ते हैं, तो हम इस्राएल के राजतंत्र का लेखा-जोखा पढ़ते हैं, जो एक के बाद एक राजाओं द्वारा पूरा किया गया, उनमें से कुछ अच्छे थे, कुछ बहुत बुरे और दुष्ट थे, और दिन के अंत में यही बात इस्राएल को परेशानी और निर्वासन में ले जाती है। लेकिन मुद्दा यह है कि, मैं तर्क दूँगा कि इस्राएल का राजतंत्र, दाऊद की वाचा से शुरू होकर और उसके द्वारा स्थापित, वह साधन है जिसके द्वारा आदम को सारी सृष्टि पर शासन करने का आदेश दिया गया और इस्राएल को शासन करने का आदेश दिया गया, निर्गमन 19.6, आप याजकों का राज्य होंगे, यह अब कैसे पूरा हुआ। सृष्टि पर शासन करने के लिए आदम का इरादा, जो पाप द्वारा बर्बाद हो गया था, फिर इरादा कि इस्राएल, एक नए आदम के रूप में, याजकों का राज्य होगा, जिस तरह से परमेश्वर अब इस्राएल के इरादे को पूरा करेगा, वह विशेष रूप से एक राजा के माध्यम से मध्यस्थता करेगा जो उन पर शासन करेगा।

तो दिन के अंत में दाऊद की वाचा, वह वाचा जो परमेश्वर ने दाऊद के साथ की कि एक राजा होगा और उसका राज्य हमेशा के लिए रहेगा और यह वह तरीका है जिससे इस्राएल का याजकों का राज्य होना अंततः फलित होगा, फिर से, यह केवल एक बाद की सोच नहीं है, कि क्यों न हम उन्हें शासन करने के लिए एक राजा दें ताकि वे व्यवस्थित रह सकें और इस तरह की चीजें कर

सकें और सभी दुश्मनों को हरा सकें, हालाँकि यह इसका एक हिस्सा है, लेकिन अंततः यह पहली रचना में आदम और हव्वा के लिए परमेश्वर के इरादे पर वापस जाता है, और फिर परमेश्वर का इरादा भी कि इस्राएल वह पूरा करेगा जो आदम और हव्वा याजकों का राज्य बनकर करने में विफल रहे। अब, इस्राएल दाऊद के राजा और राजतंत्र की स्थापना के माध्यम से याजकों के राज्य के रूप में कार्य करेगा। जब आप भजनों की ओर आगे बढ़ते हैं, तो हमें दाऊद के राजा और एक राज्य की अपेक्षा के संदर्भ मिलते हैं, लेकिन एक ऐसा जो अंततः सार्वभौमिक होगा।

इसलिए, उदाहरण के लिए, हमने भजन अध्याय 2 में देखा, जिसे अक्सर शाही भजन कहा जाता है और जिसे बाद में नए नियम में यीशु मसीह पर लागू किया जाता है। भजन अध्याय 2 में, राष्ट्रों ने षड्यंत्र क्यों रचा और लोगों की साजिश क्यों व्यर्थ हुई? पृथ्वी के राजा उठ खड़े हुए, शासक प्रभु और अभिषिक्त के विरुद्ध एकजुट हुए, और कहा, आओ हम उनकी जंजीरें तोड़ दें। श्लोक 4, स्वर्ग में विराजमान व्यक्ति हंसता है, प्रभु उनका उपहास करता है, वह उनके क्रोध में उन्हें फटकारता है।

पद 6, मैंने अपने पवित्र पर्वत सियोन पर अपने राजा को स्थापित किया है। मैं यहोवा की विधियों की घोषणा करूँगा। उसने मुझसे कहा, तू मेरा पुत्र है, आज मैं तेरा पिता बन गया हूँ।

मुझ से मांग, और मैं जाति जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति दूँगा। पृथ्वी के छोर तेरे अधिकार में हैं। इसलिए, भजन संहिता अध्याय 2 में, हम देखते हैं कि यह दाऊदवंशीय राजा के माध्यम से ही है कि अंततः, उत्पत्ति 1 की पूर्ति में पूरी पृथ्वी पर शासन करने का परमेश्वर का इरादा पूरा होगा।

और हम भजन 8 में भी कुछ ऐसा ही देखते हैं, हालाँकि यह जरूरी नहीं कि यह दाऊद का भजन हो। यह दिलचस्प है कि इब्रानियों के अध्याय 1 और 2 में, दोनों भजन मसीह का उल्लेख करते हैं। लेकिन भजन अध्याय 8, सृष्टि पर शासन करने वाली मानवता का आदर्श चित्र, भजन अध्याय 89, एक और दाऊद का पाठ, ये सभी एक दाऊद के राजा और एक ऐसे राज्य की आशा और अपेक्षा करते हैं जो पूरे विश्व और पूरी पृथ्वी पर सार्वभौमिक रूप से फैलेगा।

भजन संहिता में हम जो दूसरी बात देखते हैं, वह यह है कि पूरे भजन में इस बात पर जोर दिया गया है कि यहोवा पहले से ही पूरी पृथ्वी का राजा है। उदाहरण के लिए, भजन संहिता अध्याय 24 और पद 1 में, पृथ्वी और उसमें जो कुछ है, वह सब यहोवा का है, संसार और उसमें रहने वाले सभी लोग। क्योंकि उसने इसकी नींव समुद्र पर रखी है, और उसने इसे जल पर स्थापित किया है।

उदाहरण के लिए, भजन संहिता अध्याय 29 और श्लोक 10, प्रभु जलप्रलय पर सिंहासनारूढ़ है। प्रभु सदा के लिए राजा के रूप में सिंहासनारूढ़ है। भजन संहिता अध्याय 47 और 1 और 2, साथ ही 47 और श्लोक 1 और 2, हे सब जातियों के लोगों ताली बजाओ, प्रभु का, परमेश्वर का जयजयकार करो, क्योंकि परमप्रधान प्रभु भययोग्य है, वह सारी पृथ्वी का महान राजा है।

और भजन 103 और पद 19, बस एक और के लिए, भजन 103 और पद 19, प्रभु ने स्वर्ग में अपना सिंहासन स्थापित किया है और उसका राज्य सब पर शासन करता है। तो फिर, आपको

इस तथ्य के बीच यह तनाव मिलता है कि परमेश्वर पहले से ही सभी चीजों पर राजा है, फिर भी एक अर्थ में, उसे अभी भी पूरी सृष्टि पर अपनी संप्रभुता स्थापित करनी है और सभी लोगों को अपनी संप्रभुता और अपने शासन के अधीन लाना है। तो, अब तक हम जो देखते हैं, वह यह है कि आदम और हव्वा परमेश्वर की पहली छवि वाले हैं, जिन्हें परमेश्वर की छवि को दर्शाते हुए, पूरी सृष्टि पर शासन करना है।

उत्पत्ति 1:26-28 में परमेश्वर का इरादा यह है कि आदम और हव्वा सारी सृष्टि पर शासन करें और पूरी दुनिया में परमेश्वर के शासन और उपस्थिति का विस्तार करें, लेकिन उत्पत्ति 3 में, वे पाप के कारण ऐसा करने में विफल हो जाते हैं, और उन्हें अदन की वाटिका से निर्वासित कर दिया जाता है। फिर इस्राएल, परमेश्वर इस्राएल को अपने नए लोगों के रूप में चुनता है, एक अर्थ में, नया आदम, जो वह करेगा जो आदम करने में विफल रहा, और वह है, याजकों के राज्य के रूप में, याजकों के राज्य के रूप में, वे अब परमेश्वर के शासन और उसकी उपस्थिति को पूरी सृष्टि में फैलाएंगे। वे सारी सृष्टि में परमेश्वर के शासन की मध्यस्थता करेंगे।

फिर भी वे आदम और हव्वा से बेहतर नहीं हैं। वे भी पाप करते हैं और उन्हें देश से निर्वासित कर दिया जाता है और परमेश्वर की उपस्थिति से दूर कर दिया जाता है। लेकिन उससे पहले, थोड़ा पीछे जाकर, और अधिक विशेष रूप से, इस्राएल पुजारियों का राज्य होने के अपने उद्देश्य को कैसे पूरा करेगा? यह दाऊद के राजतंत्र के माध्यम से है।

यह राजशाही के माध्यम से है, और अधिक विशेष रूप से, राजा दाऊद के माध्यम से, दाऊद के बेटे और उसकी संतानों, उसके राज्य के माध्यम से, कि परमेश्वर न केवल इस्राएल के लिए बल्कि आदम और हव्वा के माध्यम से अपने इरादे को पूरा करेगा, कि अंततः परमेश्वर का शासन और शासन पूरी पृथ्वी पर फैल जाएगा। अब, जैसा कि मैंने कहा, इस्राएल का प्रदर्शन भी बेहतर नहीं रहा, और राजतंत्र का कायम रहना दर्शाता है कि कई राजा पापी और दुष्ट थे और आदम और हव्वा की तरह, परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा नहीं कर पाए। इसलिए, इस्राएल को भी निर्वासित कर दिया गया और परमेश्वर की उपस्थिति से हटा दिया गया और एक विदेशी राष्ट्र की दासता के तहत निर्वासित कर दिया गया।

अब, यह हमें दाऊद के राजा या राज्य की पुनर्स्थापना की भविष्यसूचक अपेक्षाओं पर ले आता है। फिर से, जिस प्रश्न पर हमने अभी विचार किया, वह अभी भी कायम है। परमेश्वर की संप्रभुता कैसे पुनर्स्थापित होगी और पूरी पृथ्वी पर कैसे विस्तारित होगी? परमेश्वर का राज्य पूरे संसार में कैसे स्थापित होगा, जिसे आदम और हव्वा को पूरा करना था, जिसे इस्राएल को पूरा करना था, लेकिन वे पाप के कारण असफल हो गए।

सवाल अभी भी बना हुआ है: परमेश्वर की संप्रभुता और राज्य को पूरी पृथ्वी पर कैसे बहाल और स्थापित किया जाएगा? यह हमें फिर से बहाल किए गए दाऊद के राज्य की भविष्यवाणी की अपेक्षाओं पर ले आता है। और याद रखें, जिस माध्यम से परमेश्वर इस्राएल के माध्यम से अपना राज्य स्थापित करने जा रहा है वह दाऊद के राजत्व के माध्यम से था, उस वाचा के माध्यम से जो परमेश्वर ने दाऊद के साथ की थी कि उसका राजत्व शाश्वत होगा, कि यह कभी समाप्त नहीं होगा। और इसलिए, हम पुराने नियम के भविष्यवाणी पाठ को दाऊद के राजत्व की बहाली के

संदर्भ में बहाली, आने वाली नई सृष्टि, आने वाले उद्धार, परमेश्वर के लोगों की आने वाली बहाली का उल्लेख करते हुए पाते हैं।

तो, उदाहरण के लिए, संभवतः सबसे प्रसिद्ध पाठ क्या है जिसे हम पहले ही पढ़ चुके हैं लेकिन हम फिर से पढ़ेंगे? सबसे प्रसिद्ध पाठों में से एक यशायाह 9 पाठ है। हालाँकि, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, दाऊद के राजत्व का विषय यहीं तक सीमित नहीं है, आपको दाऊद की एक शाखा की यह भाषा मिलती है जो उगने वाली है, जिसे नए नियम के लेखक भी उठाते हैं, लेकिन जेसी से एक जड़ या शाखा की उस तरह की भाषा के साथ, मुझे कहना चाहिए, अक्सर यशायाह का तरीका बहाल किए गए दाऊद के राजत्व की अपेक्षा को प्रदर्शित करना है। लेकिन अध्याय 9 में, छंद 6 से शुरू करते हुए, मैं 6 और 7 पढ़ूँगा। क्योंकि हमारे लिए, एक बच्चा पैदा हुआ है; हमारे लिए, एक बेटा दिया गया है, और सरकार उसके कंधों पर होगी।

जो पहले से ही राजत्व और प्रभुता की भाषा का परिचय देता है। और उसे अद्भुत परामर्शदाता, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता और शांति का राजकुमार कहा जाएगा। उसकी सरकार और शांति की महानता का कोई अंत नहीं होगा।

वह दाऊद के सिंहासन पर और दाऊद के राज्य पर शासन करेगा, उस समय से लेकर हमेशा के लिए न्याय और धार्मिकता के साथ इसे स्थापित और बनाए रखेगा। सर्वशक्तिमान प्रभु का जोश इसे पूरा करेगा। इसलिए, यशायाह 9, अपनी पुस्तक की शुरुआत में ही, दाऊद के सिंहासन और उसके राज्य की बहाली की आशा कर रहा है, जहाँ वह सभी पर शासन करेगा।

उसका राज्य सभी चीजों पर शासन करेगा और यह शाश्वत होगा। यह हमेशा चलता रहेगा। आप अन्य ग्रंथों में भी ऐसी ही बात देखते हैं।

यहेजकेल अध्याय 34, और 36 भी। यहेजकेल अध्याय 34, और इनमें से सभी पाठों में स्पष्ट रूप से दाऊद के राजा का उल्लेख नहीं है। फिर से, इनमें से कुछ अधिक व्यापक रूप से केवल उस राज्य का उल्लेख करते हैं जिसे बहाल किया जाएगा।

लेकिन यहेजकेल के अध्याय 34 और श्लोक 2 और उसके बाद, हम इनमें से बहुत कुछ पहले ही पढ़ चुके हैं, और मैं इसे फिर से पूरा नहीं पढ़ना चाहता। लेकिन यहेजकेल 34 और 2 से 28, जहाँ हम भेड़ों और चरवाहों की भाषा और यह उम्मीद पाते हैं कि इस्राएल के चरवाहों ने लोगों का नेतृत्व करने में खराब काम किया। वे दुष्ट थे।

तो अब लेखक एक और चरवाहे की आशा करता है। और वह इसका वर्णन यहेजकेल 34 की आयत 20 से शुरू करता है। इसलिए, प्रभु यहोवा उनसे यही कहता है।

देखो, मैं खुद मोटी भेड़ों और दुबली भेड़ों के बीच न्याय करूँगा क्योंकि तुम अपनी कमर और कंधों से धक्का देते हो, और सभी कमज़ोर भेड़ों को अपने सींगों से तब तक उखाड़ते हो जब तक कि तुम उन्हें भगा नहीं देते। मैं अपने झुंड को बचाऊँगा, और वे फिर कभी लूटे नहीं जाएँगे। मैं एक भेड़ और दूसरी भेड़ के बीच न्याय करूँगा।

मैं उन पर एक चरवाहा नियुक्त करूँगा, अर्थात् मेरा सेवक दाऊद। वह उनकी देखभाल करेगा, वह उनकी देखभाल करेगा और उनका चरवाहा होगा। मैं, यहोवा, उनका परमेश्वर होऊँगा, और मेरा सेवक दाऊद उनके बीच प्रधान होगा।

और मैं, यहोवा, ने यह कहा है। हम यहजकेल के अध्याय 37 में पहले ही देख चुके हैं। श्लोक 24।

मेरा सेवक दाऊद उन पर राजा होगा, और उन सबका एक ही चरवाहा होगा। वे मेरे नियमों का पालन करेंगे और मेरे नियमों का पालन करने में सावधान रहेंगे। इसलिए, यहजकेल भी दाऊद के राजतंत्र की बहाली की आशा करता है।

जब परमेश्वर अपने लोगों को वापस उनकी भूमि पर स्थापित करता है, और एक नई वाचा के सम्बन्ध में दाऊद को अपने लोगों पर शासन करते हुए दाऊद के वादों की पूर्ति करता है। जकर्याह अध्याय 14. जकर्याह अध्याय 14 में, एक अन्य पाठ भविष्य की पुनर्स्थापना, परमेश्वर के राज्य के भविष्य में आने की आशा करता है।

पद 16 से 19 में। फिर, यरूशलेम पर हमला करने वाले सभी राष्ट्रों के बचे हुए लोग हर साल राजा, सर्वशक्तिमान यहोवा परमेश्वर की आराधना करने और झोपड़ियों का त्योहार मनाने के लिए जाएंगे। यदि पृथ्वी के लोगों में से कोई भी व्यक्ति राजा, सर्वशक्तिमान यहोवा परमेश्वर की आराधना करने के लिए यरूशलेम नहीं जाता है, तो उनका कोई शासन नहीं होगा।

यदि मिस्र के लोग ऊपर जाकर भाग नहीं लेते, तो उनका कोई शासन नहीं होगा। प्रभु उन राष्ट्रों पर विपत्तियाँ लाएगा जो तम्बूओं का पर्व मनाने के लिए ऊपर नहीं जाते। उन मिस्रियों के लिए दण्ड होगा, उन राष्ट्रों के लिए दण्ड होगा जो उत्सव मनाने के लिए ऊपर नहीं जाते।

इस खंड में हम और भी बहुत कुछ पढ़ सकते हैं, लेकिन जकर्याह 14 में एक ऐसे समय की भी भविष्यवाणी की गई है जब परमेश्वर अपना शासन पुनः स्थापित करेगा, जब परमेश्वर अपने वादों को पूरा करते हुए सभी चीजों पर शासन करेगा, फिर से, मैं तर्क दूँगा कि यह सब मूल सृष्टि पर वापस जाता है जहाँ परमेश्वर का इरादा अपने स्वरूप धारकों के माध्यम से पूरी सृष्टि में अपना शासन फैलाने का था। हमें संभवतः दानियेल अध्याय 7 को भी लाना चाहिए, जिसे हमने अभी कुछ समय पहले पढ़ा था, जब दानियेल कहता है, श्लोक 11 से शुरू करते हुए, तब मैं उन घमंड भरे शब्दों के कारण देखता रहा जो सींग बोल रहा था। मैं तब तक देखता रहा जब तक कि जानवर मारा नहीं गया और उसका शरीर नष्ट नहीं हो गया।

मैं सीधे पद 13 पर आता हूँ। दानियेल अध्याय 7:13 में मैंने रात को अपने दर्शन में देखा, और मेरे सामने मनुष्य के पुत्र जैसा कोई आकाश के बादलों के साथ आता हुआ दिखाई दिया। वह उस प्राचीन के पास गया और उसे उसके सामने ले जाया गया।

उसे अधिकार, महिमा और प्रभुतापूर्ण शक्ति दी गई। सभी राष्ट्र और हर भाषा के लोग उसकी आराधना करते थे। उसका प्रभुत्व एक शाश्वत प्रभुत्व है जो दाऊद की भाषा, दाऊद की वाचा की भाषा, एक शाश्वत राज्य और एक शाश्वत प्रभुत्व को दर्शाता है जो कभी नहीं मिटेगा।

और उसका राज्य ऐसा है जो कभी नष्ट नहीं होगा। इसलिए, दानियेल 7 में मनुष्य के पुत्र की छवि की भी आशा की गई है, जिसके बारे में हमने कहा कि यह सामूहिक और व्यक्तिगत दोनों हो सकता है - एक व्यक्ति जो इस्राएल राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है।

लेकिन मनुष्य का एक पुत्र जो दाऊद के शासन को हमेशा के लिए स्थापित करने के लिए दाऊद की वाचा के इरादे को पूरा करता हुआ प्रतीत होता है। एक शाश्वत प्रभुत्व, एक शाश्वत राज्य। लेकिन मैं यह भी तर्क दूंगा कि यह सृष्टि के समय परमेश्वर के मूल इरादे से जुड़ा हुआ है कि आदम और हव्वा पूरी सृष्टि में परमेश्वर के शासन को फैलाएंगे, जो वे करने में विफल रहे।

इसलिए, पुराने नियम के साक्ष्य को संक्षेप में कहें तो, परमेश्वर को पूरी पृथ्वी पर अपना सार्वभौमिक शासन और संप्रभुता स्थापित करनी चाहिए। यही आदम और फिर इस्राएल को करना चाहिए था। फिर भी वे ऐसा करने में असफल रहे।

लेकिन परमेश्वर इसे पूरा करेगा। हम थोड़ी देर में देखेंगे। परमेश्वर अपने बेटे, एक दाऊदवंशी शासक के माध्यम से इसे पूरा करेगा, और अपने लोगों और अंततः पूरी पृथ्वी पर उद्धार और अपने राज्य की आशीषें लाएगा।

और यहीं पर मूलतः भविष्यवाणी का पाठ समाप्त होता है। उस वादे और उस उम्मीद के साथ। यह हमें समकालिक सुसमाचारों तक ले आता है।

या फिर नया नियम हमें नए नियम की ओर ले जाता है। हम सिनॉटिक गॉस्पेल से शुरू करेंगे। मैथ्यू, मार्क और ल्यूक।

क्योंकि वे सबसे स्पष्ट रूप से परमेश्वर के राज्य की भाषा का उपयोग करते हैं। जब आप समकालिक सुसमाचारों की ओर मुड़ते हैं, तो आप पाते हैं कि परमेश्वर का राज्य सुसमाचारों में उनके उपदेश और शिक्षा के आरंभ में ही यीशु की सेवकाई की सबसे विशिष्ट विशेषता बन जाता है। इसलिए, उदाहरण के लिए, मरकुस अध्याय 1 और पद 15 में, हम पद 14 पढ़ते हैं। यूहन्ना को जेल में डाल दिए जाने के बाद, यीशु परमेश्वर के सुसमाचार का प्रचार करते हुए गलील में गए।

और यह खुशखबरी है, उन्होंने घोषणा की। उन्होंने कहा, समय आ गया है, परमेश्वर का राज्य आ गया है। पश्चाताप करो और खुशखबरी पर विश्वास करो।

मत्ती अध्याय 4 में यीशु की सेवकाई की शुरुआत में हम ठीक यही बात पाते हैं। इसलिए, यीशु के बपतिस्मा और जंगल में परीक्षण के बाद। अध्याय 4 और पद 17। उस समय से, यीशु ने प्रचार करना शुरू किया, पश्चाताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है या निकट आ गया है।

अब, इन ग्रंथों में यह दिलचस्प है कि यीशु ने परमेश्वर के राज्य को परिभाषित नहीं किया है, जहाँ तक इसका अर्थ और इसमें क्या शामिल है। कोई भी उससे इसे परिभाषित करने के लिए नहीं कहता। यह दिलचस्प है।

कोई भी कभी नहीं पूछता, तुम्हारा क्या मतलब है कि परमेश्वर का राज्य निकट है? परमेश्वर का वह राज्य क्या है जो तुम अभी पेश कर रहे हो? इसके बजाय, यीशु और पाठक मान लेते हैं कि वे जानते हैं कि यह क्या है। मेरा मानना है कि यह पुराने नियम के उस पाठ पर आधारित है जिसे हमने अभी देखा है कि परमेश्वर का इरादा अपने शासन को स्थापित करना और दाऊद के राजा के माध्यम से सारी सृष्टि पर शासन करना है जो अपने लोगों को उद्धार की आशीषें और परमेश्वर के शासन की आशीषें लाएगा। और वह शासन अंततः पूरी धरती पर फैल जाएगा।

इसलिए, पुराने नियम ने वह पृष्ठभूमि तैयार की जो यह बताती है कि यीशु का क्या इरादा था और जब यीशु यह प्रचार करने आए कि परमेश्वर का राज्य निकट है, तो लोगों ने क्या समझा। अब, इससे पहले कि हम विशेष रूप से सुसमाचारों को देखें, दूसरी बात यह है कि यीशु के संदेश की सबसे खास विशेषता यह है कि, किसी तरह, राज्य पहले से ही यीशु के व्यक्तित्व और सेवकाई में मौजूद है, लेकिन यह अभी तक नहीं आया है। यह अभी भी भविष्य में है।

इसका मतलब यह है कि, एक बार फिर, हम उस आरंभिक युगांतशास्त्र के संदर्भ में हैं जो पहले से ही है लेकिन अभी तक नहीं है। परमेश्वर का राज्य पहले से ही मौजूद है। पुरुष और महिलाएँ परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकते हैं और परमेश्वर के राज्य का अनुभव कर सकते हैं।

हमने कहा कि ईश्वर के राज्य का अर्थ है ईश्वर का गतिशील शासन और शासन, ईश्वर की संप्रभुता। पुरुष और महिलाएँ भविष्य में इसके अंतिम प्रकटीकरण से पहले ही इसमें प्रवेश कर सकते हैं और इसका अनुभव कर सकते हैं। जॉर्ज एल्डन लैड के कुछ लेख, कम से कम संयुक्त राज्य अमेरिका में, लोकप्रिय बनाने में सबसे आम रहे हैं, हालांकि इससे पहले ऑस्कर कुहलमैन और अन्य लोगों ने इस विचार को विकसित और चर्चा की है कि राज्य अभी यहाँ है लेकिन अभी नहीं है।

यह जॉर्ज एल्डन लैड थे जिन्होंने इसे संयुक्त राज्य अमेरिका में और शायद अन्य जगहों पर भी लोकप्रिय बनाया, भले ही दूसरों ने इसे पहले विकसित किया हो और दूसरों ने इसे बाद में विकसित किया हो। लेकिन यह शायद राज्य की समझ की सबसे खास विशेषता है। पुराने नियम के भविष्यसूचक पाठ के अनुसार, केवल भविष्य क्या है? वे जो उम्मीद करते हैं वह कुछ भविष्य है जो प्रभु के दिन घटित होने वाला है, जब नई सृष्टि आती है, पुनर्स्थापना का दिन, जिसके बारे में अब नया यीशु और नए नियम के लेखक आश्चर्य हैं कि यह किसी तरह से अपने अंतिम समापन और प्रकटीकरण से पहले ही मौजूद है।

इसलिए, जब हम सुसमाचार के प्रमाण और नए नियम के बाकी प्रमाणों को देखेंगे तो हम इसे ध्यान में रखेंगे। अब, संक्षेप में, जहाँ तक कुछ शाब्दिक डेटा का सवाल है, वाक्यांश परमेश्वर का राज्य, जिसके बारे में मेरा मानना है कि वह वाक्यांश पुराने नियम में उस रूप में नहीं आता है, हालांकि राजा, राजत्व, और परमेश्वर के शासन करने और शासन करने और इस तरह की चीज़ों के बहुत सारे संदर्भ हैं। लेकिन वास्तव में मैथ्यू में परमेश्वर का राज्य वाक्यांश केवल चार बार आता है।

इसके बजाय, मैथ्यू एक और वाक्यांश पसंद करता है, जो स्वर्ग का राज्य है। मेरी राय में, ये दो शब्द समानार्थी हैं। वे अलग-अलग चीजों का उल्लेख नहीं कर रहे हैं।

स्वर्ग का राज्य शायद इस राज्य को ऊपर से आने वाला बताने का एक आसान तरीका है। यह सांसारिक राज्य के विपरीत है। यह एक ऐसा राज्य है जो ऊपर से आता है, जो स्वर्ग से आता है।

और इसलिए, मत्ती स्वर्ग के राज्य को प्राथमिकता देता है और इसे 32 बार इस्तेमाल करता है जबकि परमेश्वर के राज्य का चार बार इस्तेमाल करता है। मार्क परमेश्वर के राज्य वाक्यांश का 14 बार इस्तेमाल करता है। लूका परमेश्वर के राज्य वाक्यांश का 32 बार इस्तेमाल करता है।

और यूहन्ना ने इसका इस्तेमाल सिर्फ चार बार किया है। वह अनंत जीवन या जीवन शब्दों को प्राथमिकता देता है, जहाँ अक्सर समकालिक सुसमाचार परमेश्वर के राज्य को संदर्भित करते हैं। इसलिए, जैसा कि आप देख सकते हैं, पूरे सुसमाचार में, परमेश्वर का राज्य यीशु मसीह जो करने के लिए आता है और जो वह पेश करने के लिए आता है, उसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अब, इससे पहले कि हम कुछ सबूतों को देखें, अगर मैं संक्षेप में बता सकता हूँ, तो शायद अंत तक इंतज़ार करना ज़्यादा मूल्यवान होगा, लेकिन इनमें से कुछ अंशों को देखने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करना होगा। थॉमस श्राइनर, थॉमस श्राइनर ने अपने नए नियम के धर्मशास्त्र में परमेश्वर के राज्य का सारांश इस प्रकार दिया। अर्थात्, जब यीशु परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने आया, तो वह क्या पेश कर रहा था? और उसके श्रोताओं को क्या उम्मीद थी? उन्होंने क्या समझा? टॉम श्राइनर यह कहते हैं: उन्होंने उसे उस गौरवशाली युग की सुबह की घोषणा करते हुए समझा जिसमें इस्राएल को उंचा किया जाएगा, और राष्ट्र इस्राएल के परमेश्वर के अधीन होंगे।

प्रभु पूरी धरती पर राज करेंगे। दाऊद का बेटा उनका राजा बनकर सेवा करेगा और निर्वासन खत्म हो जाएगा। नई वाचा पूरी होगी।

परमेश्वर के लोग उसके नियम का पालन करेंगे, और नई सृष्टि का वादा एक वास्तविकता बन जाएगा। प्रभु सभी प्राणियों पर अपनी आत्मा उंडेलेंगे, और अब्राहम से किए गए वादे कि पृथ्वी के छोर तक सभी राष्ट्रों को आशीर्वाद दिया जाएगा, एक वास्तविकता बन जाएंगे। और श्राइनर के अनुसार, परमेश्वर का राज्य एक प्रकार का कंबल है जो इन सभी को ढक लेता है।

तो, आप देख सकते हैं कि परमेश्वर का राज्य आसानी से एक व्यापक अवधारणा बन सकता है। लेकिन यह वर्णन, मुझे लगता है, बस समय, निहितार्थ, प्रभाव और साथ में मिलने वाली आशीषों का वर्णन करता है जो तब स्थापित होती हैं जब परमेश्वर अपना राज्य स्थापित करने के लिए आता है। तो, यही वह है जिसकी लोग अपेक्षा कर रहे हैं।

और फिर, यही कारण है कि जब यीशु परमेश्वर के राज्य की घोषणा करने आता है, तो उसे इसे परिभाषित करने और वर्णन करने की आवश्यकता नहीं होती है। उसके पाठकों को यह स्पष्टीकरण मांगने की आवश्यकता नहीं है कि उसका वास्तव में क्या मतलब है। हालाँकि, हम

देखेंगे कि उसके पाठक या उसके श्रोता अक्सर भ्रमित होते हैं क्योंकि वे जो होने की उम्मीद करते हैं वह होता है।

कभी-कभी यीशु द्वारा दिया जाने वाला राज्य उनकी अपेक्षा से थोड़ा अलग रूप में होता है। लेकिन लोगों ने यही अपेक्षा की होगी जब उन्होंने सुना होगा कि परमेश्वर का राज्य अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व द्वारा पेश किया जा रहा है और घोषित किया जा रहा है, कि पुरुष और महिलाएँ इसमें प्रवेश कर सकते हैं। अब, मुझे लगता है कि शुरुआती बिंदु मैथ्यू की पुस्तक से है।

और एक बार फिर, मत्ती अध्याय 1 और श्लोक 1। बिल्कुल शुरुआत में, मत्ती यीशु मसीह को चित्रित करने, यीशु मसीह को प्रस्तुत करने और दाऊद के पुत्र के रूप में अपना बाकी काम करने के अपने इरादे को दर्शाता है। वह दाऊद का पुत्र है, अब्राहम का पुत्र है। लेकिन मत्ती यीशु को दाऊद के पुत्र के रूप में प्रस्तुत करेगा।

और ऐसा कहकर, मत्ती तुरन्त आपके मन को दाऊद के सभी वादों की ओर वापस ले जाना चाहता है। हमने 2 शमूएल 7 से लेकर भजन संहिता और भविष्यवाणियों के पाठों तक कुछ वादों को देखा। मत्ती यह स्पष्ट करना चाहता है कि यीशु अब दाऊद का राजा है।

दाऊद की वाचा की पूर्ति और पुनर्स्थापित दाऊदी राज्य के वादे। वास्तव में, हम आमतौर पर मत्ती 1 के बाकी हिस्सों में वंशावली को छोड़ देते हैं ताकि हम मसीह के जन्म पर सीधे पहुँच सकें। वंशावली दिलचस्प है क्योंकि इसका प्राथमिक कार्य यीशु मसीह को स्पष्ट रूप से जोड़ना है ताकि यह दिखाया जा सके कि उसे दाऊद के सिंहासन पर बैठने का कानूनी अधिकार है।

वह दाऊद का सच्चा पुत्र है। दिलचस्प बात यह भी है कि कुछ लोगों ने बताया है कि वंशावली को 14 पीढ़ियों के तीन सेटों में विभाजित किया गया है। मैं शास्त्र में हर जगह ऐसा करने की सलाह नहीं देता, लेकिन मुझे लगता है कि यहाँ यह जानबूझकर किया गया है।

यदि आप दाऊद के लिए हिब्रू अक्षरों के संख्यात्मक मूल्य को जोड़ते हैं, तो यह 14 आता है। यह सिर्फ एक और तरीका है जिससे मैथ्यू के लेखक इस बात को पुष्ट कर रहे हैं कि यीशु मसीह ही सच्चे दाऊद के राजा हैं जो दाऊद के साथ वाचा को पूरा करने के लिए आते हैं। दिलचस्प बात यह है कि मैथ्यू 1 में, दाऊद के पिता, यूसुफ को दाऊद के बेटे के रूप में संबोधित किया गया है, और यीशु मसीह को अन्यत्र दाऊद के बेटे के रूप में संबोधित किया गया है।

मत्ती ने दाऊद की भाषा और पाठों को हर जगह से लिया है ताकि यह स्पष्ट हो सके कि यहाँ वादा किया गया दाऊद का राजा है। यह वह है जो शाश्वत प्रभुत्व, दाऊद से वादा किए गए शाश्वत राज्य को बहाल करेगा और पूरा करेगा। अब, अगले भाग में हम जो करेंगे वह एक बार फिर सुसमाचार के प्रमाण के साथ शुरू करना है।

हम केवल कुछ ही ग्रंथों पर संक्षेप में नज़र डालेंगे जो दर्शाते हैं कि यीशु द्वारा घोषित परमेश्वर का राज्य एक ही समय में वर्तमान और भविष्य दोनों है।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर उनके व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है।

यह ईश्वर की छवि, भाग 2, और ईश्वर के राज्य का परिचय पर सत्र 16 है।